P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-5* August- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय लोकतन्त्र में हिन्दी पत्रकारिता कल, आज और कल

सुनीता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
ब्रह्मावर्त पी0जी0 कालेज,
मन्धना, कानपुर नगर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

पत्रकारिता और साहित्य एक–दूसरे के सहचर है। हिन्दी के दैनिकों ने जहाँ देश को उदबुद्ध करने का अथक प्रयास किया है, वही उन्होंने जनता में साहित्यिक चेतना को जागृत करने का श्रेय भी पाया है। आधुनिक पत्रकारिता हृदय के अन्तरतम का स्पर्श करने और जीवन का सर्वांगीण विकास करने का मूल निमित्त कही जा सकती है।

भारतीय वाङ्.मय में देवर्षि नारद को इस सृष्टि का प्रथम पत्रकार होने का गौरव प्राप्त है। पत्रकारिता एक ऐसा सूर्य है जिसकी भेदक किरणों से क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर की कोई भी परत लुप्त अथवा गुप्त नहीं है। यह संजय की दिव्य दृष्टि है जो दूर–सुदूर, बूँद में सागर, वामन में विराट, चरण में आचरण, चिन्गारी में दावानल और लहर में कहर है। हाथो–हाथ, कानो–कान, चुटकी बजाते पल भर में कुछ का कुछ, कर देने वाली नटखट नृत्यांगना है पत्रकारिता।

जीवन और समाज को प्रभावित करने वाली यह विधा अत्यन्त जागरूक, सतर्क, सोद्देश्य, सशक्त एवं प्रभावित करने वाली यह विधा धरातल पर घटित होने वाली समस्त घटनाओं की साक्षी पत्रकारिता आज प्रत्येक प्रबुद्ध और सचेतन सामाजिक के लिए उतनी ही अनिवार्य है जितनी की रोटी हवा और पानी।

मुख्य शब्द : उपभोक्तावादी, बाजारवाद, महाविस्फोट भूमण्लीयकरण, सोद्देश्य, आचार संहिता, प्रतिबद्धता।

प्रस्तावना

भारतीय लोकतन्त्र में हिन्दी पत्रकारिता भी अत्याधुनिक संसाधनों और तकनीक से लैस हुई और उसने समय–समय पर बड़ी से बड़ी राजनीतिक दुरभि संधियों, भ्रष्टाचारों, घोटालों और माफिया तंत्र के काले कारनामें को उजागर करने का जोखिम उठाया है। यही नहीं समाज को नई दिशा देने वाले अचर्चित घटनाओं, प्रतिभाओं को भी समाज और राष्ट्रीय परिदृश्य पर प्रस्तुत करने का कार्य करके अपनी वास्तविक भूमिका का निर्वाह किया। पत्रकार लोकतंत्र का पहरूआ है और पत्रकारिता लोकशाही की बुलदं आवाज। पत्रकारिता मदमस्त सत्ता की आँख में किरकिरी और सामान्य मनुष्य के आँख का कॉलज है।

समाचार एक सजग प्रहरी की भूमिका निभाते है। अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, स्थानीय क्षितिज पर घटने वाली दैनिक, प्राकृतिक, मानुषिक संकटो की पूर्व जानकारी देकर सचेत करते हैं। समाचार अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुये समाज की विभिन्न इकाइयों सरकार, जनता, व्यक्ति, समाज आदि के मध्य समन्वय स्थापित करते है।

स्वतन्त्रता पूर्व काल–वाणी को साधने वाले पत्रकार और पत्र–पत्रिकाएँ काँच की धार पर चलकर उन अग्निपथों को पार करती थी जो आज सुविधाजनक सुरंगों में तब्दील हो चुके है। तटस्थता और निष्पक्षता तराजू के दो पलड़े थे आज तराजू के पलड़ों को समरेखा पर रखने वाला दंड ही गिरगिट मुद्रा में चक्रासन करता है।

गाँधी जी के अनुसार जन सामान्य की इच्छाओं को भली प्रकार समझना, उनकी भावनाओं को जाग्रत करना तथा सार्वजनिक दोषों को निडर होकर उजागर करना पत्रकारिता का उद्देश्य है। सुप्रसिद्ध कवियित्री महादेवी वर्मा ने तो यहँ तक कहा है कि 'पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है। अतः समाज को बदलना उनका मुख्य उद्देश्य है।

संवेदनशील 'पत्रकारिता' सिर्फ खबरों को ढूढ़ने और उन्हें प्रकाशित करने के लिए नहीं है, उसका दायित्व एक सभ्य, सुसंस्कृत और न्याय परक समाज की पुनर्रचना और विकास के लिये लोगों को जागरूक, उद्बुद्ध और

उत्प्रेरित करना भी है। सैटेलाइटर की वैज्ञानिक चौकन्नी निगाहों पर पत्रकार की पलकें पुतलियाँ आदि निर्निमेष टिकी है, तभी वह सूचना सुबह का सुत्रधार बन सकता है, अन्यथा बाल से किशोर होते सूर्य का गतिचक्र सारी उत्सुकता समाप्त कर देता है।

हिन्दी पत्रकारिता ने नई–नई मंजिले तय की है, पं0 जुगुल किशोर शुक्ल, भारतेन्दु, प्रताप नारायण मिश्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, बालमुकुन्द गुप्त, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, महात्मा गाँधी जैसे तेजस्वी विचारवान और रचनाशील कई लोगों ने हिन्दी पत्रकारिता को नई त्वरा और दिशा दी। ऐसे पत्रकार आज भी है जो सूर्य के उदय–अस्त को अपनी चेतना–फाकों में सेतु बनाकर पथ निर्मित करते है और काल की तरेरती आँखों से आँखे मिलाकर पत्रकारीय सत्य को परिभाषित करते है।

आज तो समाचार जगत को शुद्ध उद्योग स्वीकार लिया गया है। आजकल क्षुद्र राजनीति, गुटबाजी, निजी स्वार्थ के हित में पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होकर कई पत्रकार आचार संहिता का खुला उल्लंघन कर प्रेस और समाचार पत्रों पर निराधार आरोप लगाकर उन्हें बदनाम करने से नहीं चूकते है। उनका लक्ष्य जनहित न होकर स्वहित या स्वजनहित होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शोधार्थी का इस विषय को लेकर मुख्य उद्देश्य हिन्दी साहित्य में पत्रकारिता के प्रतिमान के आलोक में पत्रकारिता की आदर्श भूमिका की तलाश करना।
2. भारतीय जनमानस के हित में स्वस्थ पत्रकारिता एवं विकसित लोकतन्त्र एवं समय साध्य उपायों का सम्प्रेषण करना।
3. भारतीय लोकतंत्र में पत्रकारिता के बढ़ते प्रसाद के बावजूद पत्रकारिता के स्थापित आदर्शों से विचलित होने एवं भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के एक महत्वपूर्ण स्तम्भ होने के बावजूद स्वयं उसकी गिरफ्त में आने के कारणों की तह में उतरकर उन मूल कारणों एवं परिवर्त्यों का अन्वेषण करना।
4. पत्रकारिता के माध्यम से युवा पीढ़ी को उस स्वर्णिम काल के त्याग, बलिदान और देश की सेवा के पुनीत कार्यों से अवगत कराना। इससे सीख लेकर हमारी भावी पीढ़ियाँ, राष्ट्र प्रेम, देशभक्ति और सेवा का बीड़ा उठाकर देश को इस उलझन से बचा सकती है।

साहित्यावलोकन

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (कवि वचन सुधा) इस पत्र में हिन्दी साहित्य व पत्रकारिता को नए आयाम दिए। भारतेन्दु जी ने इस पत्रिका के माध्यम से ऐसे लेखक मंडल और पत्रकार मण्डल का निर्माण किया, जिससे विभिन्न हिन्दी भाषी प्रदेशों मे हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ निकालने तथा उनमें लिखने की इच्छा लोगों में जागृत हो।

पण्डित जुगल किशोर (उदंत मार्तण्ड) अज्ञान तथा रूढ़ियों के अधेंरों में जकड़े हुए हिन्दुस्तानी लोगों की प्रतिभाओं पर प्रकाश डाला गया है। सुषुप्त समाज को जागृत करना तथा उनके अन्दर व्याप्त जड़ता को समाप्त करने का प्रयास किया गया है।

राजा लक्ष्मण सिंह (प्रजा हितैषी) प्रजा के हित के लिए पत्रकारिता की भूमिका का निर्वाह अनेक चुनौतियों और जोखिम को उठाते हुए किया।

प्रताप नारायण मिश्र (ब्राम्हण) प्रताप नारायण मिश्र ने नवजागरण का संदेश जन जीवन तक पहुंचाने और उन्हें जागृत करने और उनके अन्दर के भय अंधकार को दूरकरने के लिए साहित्यिकर सेवा का ब्रत लिया।

निष्कर्ष

आधुनिक लोकतंत्र में हर चीज के लिए कानून है और कानून पालन हो रहा या नही यह देखने के लिए भी इन्तजाम किया गया है। पत्रकारिता अपूर्णताओं और विकृतियों को सामने लाती है। इसी में उसकी ताकत है।

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद पत्रकारों की मानसिकता में भारी परिवर्तन आया उसने जनहित की मूल धुरी को छोड़कर पत्रकारिता को स्वार्थी और धन लाभ से प्रेरित होकर 'स्वदेश निष्ठा' को राजनीतिक दलों की निष्ठा के प्रति सौंप दिया। सिर्फ खबरे छापके और जनरल रिर्पोटिंग की छोड़ में मीडिया हर उस ईमानदार और साहसी हस्तक्षेप से बचती नजर आती है, जिसके जरिये वह समाज, सरकार और नागरिकों को उनके दायित्वों का एहसास करा सकती है।

परिपक्व होते लोकतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका जहाँ एक ओर उन्नत होनी चाहिए। जनमत के निर्माण में उसकी सक्रिय और निष्पक्ष भूमिका होनी चाहिए तथा समाज के उदासीन एवं गैर जागरूक तबके लोकतंत्र एवं राजनीति की मुख्य धारा से जोड़ने का गुरूतर दायित्व होना चाहिए वही वर्तमान पत्रकारिता अपने उक्त दायित्वों के पैमाने पर खरा उतरता दिखाई नही दे रहा है। इसलिये यह न केवल समय की मांग है, बल्कि बुद्धिजीवी वर्ग का क्रियानिष्ठ कर्तव्य भी वह पत्रकारिता की गिरती हुई भूमिका की पड़ताल करे और सुधार के आवश्यक एवं प्रासंगिक समाधान को प्रस्तुत करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हरिश्चन्द्र भारतेन्दु (1868) (कविवचन सुधा) (भारतेन्दु युगीन साहित्य में राष्ट्रीय भावना), राजपाल एण्ड सन्ज, काश्मीरी गेट दिल्ली पृ0सं0 33*
2. *मिश्र प्रताप नारायण (1883) (पत्रकारिता प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि), आशीष प्रकाशन, कानपुर, पृ0सं0 90*
3. *हरिश्चन्द्र भारतेन्दु (1874) (पत्रकारिता कल आज और कल), सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ0सं0 54*
4. *विद्यार्थी गणेश शंकर (1913) प्रताप पत्रिका, (पत्रकारिता प्रशिक्षण), हरीश प्रकाशन मन्दिर, आगरा, पृ0सं0 67*
5. *सिंह राजा लक्ष्मण (1861) (प्रजा हितैषी) भारतेन्दु युगीन साहित्य में राष्ट्रीय भावना, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, पृ0सं0 132*